यह पुस्तक **अरावली पर्वतमाला** पर मंडरा रहे नए और बहुआयामी संकट की ओर गंभीर ध्यान आकृष्ट करती है। खनन आधारित तथाकथित विकास, पर्यावरणीय कानूनों की शिथिलता और नीतिगत असंतुलन ने अरावली के जल-स्रोतों, वन-आवरण और पारिस्थितिक संतुलन को गहरे खतरे में डाल दिया है। अरावली का संकट केवल पहाड़ों के टूटने तक सीमित नहीं है; यह भूजल के सूखने, कृषि के संकटग्रस्त होने, युवाओं के बेरोज़गार होने और सामाजिक अस्थिरता के रूप में सामने आ रहा है।

यह ग्रंथ स्पष्ट करता है कि अरावली उत्तर और पश्चिम भारत की जलवायु, वर्षा-चक्र और मरुस्थलीकरण रोकने वाली प्राकृतिक ढाल है। इसके क्षरण का अर्थ है जल-सुरक्षा और खाद्य-सुरक्षा पर सीधा आघात। पुस्तक यह भी रेखांकित करती है कि प्रकृति-विरोधी निर्णय केवल पर्यावरण नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों और आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों को भी प्रभावित करते हैं। अरावली का संरक्षण इसलिए एक पर्यावरणीय विकल्प नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दायित्व है।

जलपुरुष डॉ. राजेन्द्र सिंह

(जल, जन और जीवन के सच्चे प्रहरी)

जल पुरुष **डॉ. राजेन्द्र सिंह** भारत के अग्रणी जल-संरक्षण कार्यकर्ता और विश्व-प्रसिद्ध पर्यावरण चिंतक हैं। उन्होंने अपने जीवन को जल, जंगल और जन-समुदाय के संरक्षण के लिए समर्पित किया है। राजस्थान के अलवर क्षेत्र में **तरुण भारत संघ** के माध्यम से उन्होंने पारंपरिक जल-संरचनाओं—जोहड़, तालाब और बावड़ियों—का पुनर्जीवन कर यह सिद्ध किया कि जन-भागीदारी से सूखे क्षेत्रों को भी जल-समृद्ध बनाया जा सकता है। उनके प्रयासों से अरवरी सहित अनेक नदियाँ पुनर्जीवित हुईं, खेती लौटी और ग्रामीण पलायन रुका। डॉ. राजेन्द्र सिंह का जल-दर्शन तकनीकी के साथ-साथ सांस्कृतिक और नैतिक भी है। वे जल को जीवन का अधिकार और सामाजिक न्याय का विषय मानते हैं। अरावली संरक्षण और खनन-विरोधी आंदोलनों में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। जल-संरक्षण में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें **स्टॉकहोम वाटर प्राइज़** (2015) से सम्मानित किया गया। उनका जीवन और कार्य सतत विकास और लोक-आधारित पर्यावरण संरक्षण की प्रेरक मिसाल है।

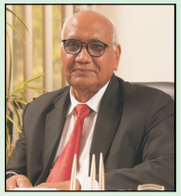

पर्यावारणविद प्रोफ.(डा.) भरत राज सिंह, महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ का जन्म, 1947 में जनपद-सुल्तानपुर के एक गाँव राईबीगों में हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा सुल्तानपुर व जौनपुर से हुई तथा इन्होंने बी.एससी. की डिग्री इलाहाबाद-विश्वविद्यालय से 1967 में पूर्ण की तथा यांत्रिक-संवर्ग में तकनीकी ग्रेजुएट शिक्षा, 'सरदार बल्लभ रीजनल कॉलेज, सूरत गुजरात' से 1972 में, पोस्ट-ग्रेजुएट, 'मोतीलाल रीजनल कालेज इलाहाबाद' से 1988 में व पीएच.डी. की उपाधि, उत्तर-प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से 2010–11 में प्राप्त की। इन्हे पर्यावरण व विज्ञान के शोध पर **"सी.वी. रमन शोध व नवाचार केंद्र"** के माध्यम से तमाम राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड व 3-लिम्का बुक रिकॉर्ड से सम्मानित किया गया है। हवा से चलने वाली बाइक का इंजन शोध अनोखा है | इसके अलावा, डॉ० सिंह, देश व विदेश में योगाभ्यास कराकर, लोगो को स्वस्थ रहने और अध्यात्मिक पहलू से जीवन-जीने की प्रेरणा **"वैदिक विज्ञान केंद्र"**, लखनऊ के माध्यम से दे रहे है।

SMS LUCKNOW **SCHOOL OF MANAGEMENT SCIENCES,**
Sultanpur Road, Lucknow-226501 (U.P.) INDIA
www.smslucknow.com

Available Online at : www.krishnaprakashan.com

Published by :

KRISHNA PRAKASHAN MEDIA PVT. LTD.

KRISHNA HOUSE, 11, Shivaji Road, Meerut-250 001 (U.P.), India

Krishna House, 11, Shivaji Road, Meerut – 250 001 (U.P.), India

Ph.: 91.121.4026111, 4026112, 7055881881

info@krishnaprakashan.com

Rs. : 450.00 only

ISBN 937628729-0

9789376287291

अरावली पर नया संकट - जलपुरुष राजेन्द्र सिंह, डॉ भरत राज सिंह

KRISHNA

क्या अरावली जैसी है, वैसी बनी रहेगी?
क्या भारत की संस्कृति–प्रकृति बची रहेगी?

अरावली पर नया संकट

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ, राजस्थान

"समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।"

सम्पादक: प्रोफ.(डा.) भरत राज सिंह, महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ-226501